1 सितंबर, 2024

पिन्तेकुस्त के बाद 15वां रविवार

परमेश्वर का न्याय उचित और दयापूर्ण होता है

यशायाह 51.3-8

भजन संहिता 9.7-12

रोमियों 2.1-11

यूहन्ना 8.2-11

हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से आपको अनुग्रह और शांति मिले। आज, पिन्तेकुस्त के बाद इस 15वें रविवार के दिन, हम एक गहरे और कभी-कभी परेशान करने वाले विषय पर विचार करने के लिए एकत्रित हुए हैं: यह विषय परमेश्वर का न्याय है। न्याय की धारणा अक्सर भय और चिंता की भावनाएँ लेकर आती है, लेकिन जैसा कि हम आज खोज करेंगे, परमेश्वर का न्याय न केवल उचित है, वरन् दया से भरा हुआ भी है। अन्याय से भरे इस संसार में, परमेश्वर के उचित न्याय का आश्वासन हमें आशा प्रदान करता है। हम इस विषय को पवित्रशास्त्र में दिए गए वचनों, यशायाह 51:3-8, भजन संहिता 9:7-12, रोमियों 2:1-11, और यूहन्ना 8:2-11 के नज़रिए से देखेंगे, और विचार करेंगे कि कैसे परमेश्वर का न्याय उसकी खराई और उसकी दया दोनों का प्रदर्शन है।

1. परमेश्वर के न्याय की खराई (भजन संहिता 9:7-12)

भजन संहिता 9:7-8 में भजनकार ने घोषणा की है कि, "परन्तु यहोवा सदैव सिंहासन पर विराजमान है, उसने अपना सिंहासन न्याय के लिये सिद्ध किया है; और वह आप ही जगत का न्याय धर्म से करेगा, वह देश देश के लोगों का मुक़द्दमा खराई से निपटाएगा।" ये आयतें इस बात पर ज़ोर देती हैं कि परमेश्वर का न्याय मनमाना या अन्याय से भरा हुआ नहीं है, बल्कि खराई और न्याय पर आधारित है। सर्वोच्च न्यायी के रूप में, परमेश्वर सब कुछ देखता है और सब कुछ जानता है। वह दिखावे से प्रभावित नहीं होता या वह पक्षपात से प्रभावित नहीं होता, जैसा कि मानवीय न्यायी हो सकते हैं। परमेश्वर के न्याय की खराई पूरे बाइबल में एक केंद्रीय विषय है। यह हमें आश्वस्त करता है कि बुराई को दंडित किए बिना नहीं छोड़ा जाएगा और धार्मिकता को प्रतिफल दिया जाएगा। यह एक ऐसे संसार में सांत्वना देने वाली बात है, जहाँ अक्सर अन्याय हावी होता दिखता है। हम भ्रष्टाचार, शोषण और निर्दोष लोगों पर अत्याचार होते हुए देखते हैं, और यह हमें इस प्रश्न को सोचने पर मजबूर कर सकता है कि क्या कहीं कोई न्याय है

भी या नहीं। फिर भी, पवित्रशास्त्र हमें याद दिलाता है कि परमेश्वर का न्याय खरा और निष्पक्ष है। वह सभी गलतियों को सही करेगा, और उसके न्याय की वाणी अंतिम होगी।

2. बहाली का वायदा (यशायाह 51:3-8)

यशायाह 51:3 एक सुंदर वायदा करता है: "यहोवा ने सिय्योन को शान्ति दी है, उसने उसके सब खण्डहरों को शान्ति दी है; वह उसके जंगल को अदन के समान और उसके निर्जल देश को यहोवा की वाटिका के समान बनाएगा; उसमें हर्ष और आनन्द और धन्यवाद और भजन गाने का शब्द सुनाई पड़ेगा।" यहाँ, हम देखते हैं कि परमेश्वर का न्याय केवल दण्ड के बारे में नहीं है, बल्कि बहाली अर्थात् पुनर्स्थापना के बारे में भी है। उसका न्याय उसकी दया के साथ जुड़ा हुआ है। इस अनुच्छेद में, परमेश्वर सिय्योन को बहाल करने, उसके उजाड़ स्थानों को अदन के समान स्वर्ग में बदल देने का वायदा करता है। यह परमेश्वर के दया से भरे न्याय का एक शक्तिशाली दृश्य है। न्याय करते समय भी, वह छुड़ाता और बहाल भी करता है। परमेश्वर का न्याय बदला लेने वाला नहीं है; वरन् यह तो बहाल करने वाला है। यह चँगाई और नयेपन को लाने का प्रयास करता है। इस दर्शन में परमेश्वर के न्याय और दया का धर्मविज्ञान बहाली को शामिल करता है। जब परमेश्वर अपने लोगों को अनुशासित करता है, तब भी, उसका अंतिम लक्ष्य उन्हें अपने पास वापस लाने का होता है, और उन्हें आशीष और शांति की स्थिति में बहाली का होता है।

3. परमेश्वर के न्याय की निष्पक्षता (रोमियों 2:1-11)

रोमियों 2:6-11 में, प्रेरित पौलुस लिखता है कि, "वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा : जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में हैं, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा; पर जो विवादी हैं और सत्य को नहीं मानते, वरन् अधर्म को मानते हैं, उन पर क्रोध और कोप पड़ेगा।" यह अनुच्छेद परमेश्वर के न्याय की निष्पक्षता को उजागर करता है। परमेश्वर किसी तरह का कोई पक्षपात नहीं करता। चाहे यहूदी हो या गैर-यहूदी, सभी का न्याय उनके कामों के अनुसार ही होता है। पौलुस का संदेश स्पष्ट है कि: कोई भी परमेश्वर के न्याय से बच नहीं सकता। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस पृष्ठभूमि से आता है, आपके पास क्या विशेषाधिकार रहे हैं, या आपने कौन से धार्मिक अनुष्ठान किए हैं। जो मायने रखता है, वह यह है कि आपने अपना जीवन कैसे जिया है। क्या आपने भला करने की कोशिश की है, परमेश्वर की सच्चाई के अनुसार जीने की कोशिश की है? या आप स्वार्थी रहे हैं, परमेश्वर की आज्ञाओं की अवहेलना की है? परमेश्वर के न्याय की यह निष्पक्षता उसके सिद्ध न्याय के विचार की पुष्टि करती है। मानवीय न्यायियों के विपरीत, जो पक्षपात या बाहरी बातों से प्रभावित हो सकते हैं, परमेश्वर का न्याय पूरी तरह से सत्य और धार्मिकता पर आधारित है। इससे हमें स्वयं की जाँच करनी चाहिए। क्या हम ऐसे तरीके से जी रहे हैं, जो परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप है? क्या हम उसकी महिमा की खोज कर रहे हैं, या अपनी ही स्वार्थी इच्छाओं से प्रेरित हैं?

4. परमेश्वर के न्याय में दया का होना (यूहन्ना 8:2-11)

यूहन्ना 8:2-11 में व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री की कहानी परमेश्वर के न्याय में दया का एक शक्तिशाली उदाहरण है। धार्मिक अगुवे इस स्त्री को मूसा की व्यवस्था के अनुसार पत्थरवाह करने की तैयारी के साथ यीशु के पास लाए थे। लेकिन यीशु ने अद्भुत बुद्धि और दया के साथ इसके लिए उत्तर दिया। उसने कहा, "तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे" (यूहन्ना 8:7)। एक-एक करके, दोष लगाने वाले वहाँ से चले गए, और यीशु उस स्त्री के साथ अकेला रह गया। फिर उसने उससे कहा, "मैं भी तुझ पर दण्ड की आज्ञा नहीं देता; जा, और फिर पाप न करना" (यूहन्ना 8:11)। यह **अनुच्छेद** दिखाता है कि परमेश्वर का न्याय न केवल धार्मिकता से भरा है, बल्कि दया से भरा हुआ भी है। यीशु ने स्त्री पर पाप का दोष नहीं लगाया, परन्तु साथ ही उसने उसकी निंदा भी नहीं की। उसने उसे पश्चाताप करने और अपने तरीके बदलने का मौका दिया। यही परमेश्वर की दया का सार है। जबकि वह धर्मी और न्यायी है, तथापि वह दयालु भी है और उन लोगों को क्षमा करने के लिए तैयार है, जो उसकी ओर फिरते हैं। यह कहानी हमें यह भी याद दिलाती है कि हमें दूसरों पर दोष लगाने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। हम सभी पापी हैं और हमें परमेश्वर की दया की आवश्यकता है। उसकी दया के प्राप्त करने वालों के रूप में, हमें दूसरों पर भी उसी दया को दिखाने के लिए कहा गया है। परमेश्वर का न्याय बदला लेने के बारे में नहीं है, बल्कि लोगों को पश्चाताप और बहाली की ओर ले जाने के बारे में है।

निष्कर्ष

जब इन वचनों के सार पर पहुँचते हैं, तो हमें याद रखना चाहिए कि परमेश्वर का न्याय उचित और दया से भरा हुआ दोनों ही है। वह एक धर्मी न्यायी है, जो सब कुछ देखता है और सब कुछ जानता है। उसका न्याय निष्पक्ष है, और कोई भी इससे बच नहीं सकता। लेकिन साथ ही, उसका न्याय दया से भरा हुआ है, जो हमें पश्चाताप करने और बहाल होने का अवसर प्रदान करता है।

परमेश्वर के न्याय की वास्तविकता हमें धार्मिकता से भरे जीवन को जीने, भलाई करने और उसकी इच्छा का पालन करने की ओर ले जानी चाहिए। इसे हमें आशा से भी भर देना चाहिए, यह जानते हुए कि परमेश्वर का न्याय अंत में प्रबल होगा ही और उसकी दया हमेशा उन लोगों के लिए उपलब्ध है, जो इसकी कामना करते हैं। आइए हम परमेश्वर के न्याय और दया दोनों को ही अपना लें, उसके उचित न्याय और उसके दया से भरे प्रेम पर भरोसा करें। हम ऐसे तरीके से जियें जो उसके चरित्र को दर्शाता हो, और हम दूसरों को भी उस दया दिखाएँ को दिखाएँ जिसे हमने प्राप्त किया है।

प्रार्थना

हे कृपालु और दयालु परमेश्वर, हम आपके उचित न्याय और धार्मिकता से भरे न्याय के लिए आपको धन्यवाद देते हैं। हम आपकी दया के लिए आभारी हैं, जिसे आप हमारी कमियों के बावजूद हमें देते हैं। हमें ऐसा जीवन जीने में मदद करें, जो आपको सम्मान दे, जो हमें भला करने और आपकी इच्छा का पालन करने की कोशिश में मदद करे। हम हमेशा आपके न्याय के प्रति सचेत रहें और दूसरों को भी आपकी दया को दिखाएँ। हम आपके मार्गदर्शन और

सामर्थ्य के लिए प्रार्थना करते हैं, क्योंकि हम आपकी सच्चाई के अनुसार जीने का प्रयास करते हैं। यीशु के नाम में, हम इस प्रार्थना को करते हैं। आमीन।